बिना किसी मूल्य के पीने और खाने का निमंत्रण

यशायाह 55:1-2 (NIV):

“हे प्यासे, सब आओ! जल के पास आओ; और तुम जिनके पास धन नहीं
है, आओ, खरीदो और खाओ! आओ, बिना पैसे और बिना किसी मूल्य के
शराब और दूध खरीदो। क्यों तुम उन चीज़ों पर धन व्यर्थ खर्च
करते हो जो भक्षण नहीं हैं, और उन कामों में अपनी मेहनत
लगाते हो जो संतोष नहीं देते? सुनो, सुनो मुझसे, और अच्छा
खाओ, और तुम सबसे समृद्ध भोजन में आनंदित होगे।”

हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम धन्य हो!
मैं आपका स्वागत करता हूँ कि आप मेरे साथ इस शास्त्र पर ध्यान दें। जब मैंने इन पदों पर ध्यान लगाया, तो मेरे मन में एक स्पष्ट छवि उभरी – एक ऐसा दृश्य जो पूरी तरह से उस अनुग्रह को दर्शाता है जो परमेश्वर हमें प्रदान करता है।

कल्पना कीजिए एक भव्य 5 स्टार होटल दुबई में। केवल नाश्ते की कीमत ही लाखों शिलिंग्स हो सकती है, और खाने, रात्री भोजन और ठहरने के खर्च का जिक्र न करें। अब सोचिए: होटल का मालिक, जो सबसे धनी व्यक्तियों में से एक है, सभी को आमंत्रित करता है, चाहे उनकी वित्तीय स्थिति कैसी भी हो, कि वे भोजन का आनंद मुफ्त में लें। वे कहते हैं: “आओ, मुफ्त में खरीदो और खाओ!”

यह आमंत्रण सिर्फ एक उपहार नहीं है, बल्कि इस तरह है कि आप “खरीद” रहे हैं बिना किसी मूल्य के, जैसे कोई सामान्य भुगतान करने वाला ग्राहक, और आपको रसीद दी जाएगी और पूरी तरह से समान व्यवहार किया जाएगा।

अब आप सोच रहे होंगे कि इतने उच्चतम होटल में इतनी कम संख्या में लोग क्यों आते हैं। क्या आप नहीं सोचते कि होटल भीड़ से भर जाएगा? शायद लोग खुद को अयोग्य मानते हैं, होटल की भव्यता से डरते हैं, या भयभीत होते हैं कि उन्हें ऐसा माना जाएगा कि वे वहां नहीं आते? यह भी एक धार्मिक विचार पैदा करता है कि हम अक्सर परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

ठीक उसी तरह, परमेश्वर हम सभी को एक मुफ्त निमंत्रण दे रहे हैं। वह हमें बुला रहे हैं कि हम उनकी भलाई, उनका आध्यात्मिक भोजन और पेय बिना किसी शुल्क के ग्रहण करें, लेकिन हममें से कई लोग इस प्रस्ताव के अत्यधिक मूल्य को नहीं समझते। यह वही है

जो यशायाह 55:1-2 में वर्णित है:

“हे प्यासे, सब आओ! जल के पास आओ; और तुम जिनके पास धन नहीं
है, आओ, खरीदो और खाओ! आओ, बिना पैसे और बिना किसी मूल्य के

शराब और दूध खरीदो।”

जैसे होटल की छवि में, परमेश्वर हमें अपनी प्रचुरता में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हैं, और हमें सदैव जीवन प्रदान करते हैं, बिना किसी वित्तीय भुगतान के।

लेकिन कई लोग इस निमंत्रण का जवाब नहीं देते क्योंकि वे इसे महत्वहीन मानते हैं। कई लोग उद्धार के मूल्य को नहीं पहचानते क्योंकि वे सांसारिक चीजों में व्यस्त हैं, जो अंततः उनकी आत्मा को संतोष नहीं दे सकते। यह वैसा है जैसे परमेश्वर हमें एक खजाना दे रहे हैं, लेकिन हम इसे अनदेखा कर देते हैं, यह सोचकर कि हमें सांसारिक संपत्ति का पीछा करना चाहिए, जो अंततः हमें खाली छोड़ती है।

विरोधाभास यह है कि जब कुछ मुफ्त में दिया जाता है, तो हम अक्सर इसे कम मूल्य का मानने लगते हैं। यदि कुछ बहुत मूल्यवान है, लेकिन हम इसे मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं, तो हम अवचेतन रूप से मान सकते हैं कि इसकी कोई कीमत नहीं है। यह सिद्धांत जीवन के कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, वे देश जिनके पास बहुत बड़ा कर्ज है, अक्सर उन लोगों का कर्ज माफ कर देते हैं जो चुका नहीं सकते, न कि इसलिए कि वे कर्ज को कम मूल्य का मानते हैं, बल्कि इसलिए कि वे समझते हैं कि ऋणी उसे चुकाने में असमर्थ

है।

सोचिए कि हम अपनी सांस, बारिश और सूर्य की ऊर्जा को कितना सामान्य मान लेते हैं। यदि हमें सूर्य की जीवनदायिनी ऊर्जा या हर साँस के लिए भुगतान करना पड़ता, तो हम ऋण में डूब जाते। फिर भी, परमेश्वर ये उपहार मुफ्त में देते हैं। लेकिन सबसे महान उपहार है यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार।

परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिए अपनी एकमात्र संतान यीशु मसीह के जीवन के माध्यम से उच्चतम मूल्य प्रदान किया। यीशु ने पापमुक्त जीवन जिया, और 33 वर्षों तक उन्होंने अद्भुत परीक्षाओं और प्रलोभनों को सहा, अंततः प्यार के अंतिम कार्य – क्रूस पर बलिदान के लिए। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए मूल्य चुकाया, वह “ऋण पत्र” जो हमारे खिलाफ था, फाड़ दिया और इसे “पूरा हुआ” घोषित किया जब यीशु ने कहा, “पूरा हुआ!” (यूहन्ना 19:30)।

इसलिए उद्धार हमें मुफ्त में दिया जाता है, यह अमूल्य है, और मूल्य पहले ही चुका दिया गया है। यीशु के बलिदान के माध्यम से हमें सदैव जीवन का प्रवेश मिलता है। लेकिन कितने लोग वास्तव में इस प्रस्ताव को समझते हैं और स्वीकार करते हैं?

यीशु आज भी हमें बुला रहे हैं, जैसे उन्होंने यशायाह के समय में

और क्रूस पर अपने कार्य के माध्यम से किया:
“हे प्यासे, सब आओ! जल के पास आओ; और तुम जिनके पास धन नहीं है, आओ, खरीदो और खाओ!”

उद्धार का निमंत्रण अभी भी खुला है, लेकिन कई लोग जवाब नहीं देते। सवाल यह है कि हम ऐसे उदार उपहार को स्वीकार करने में क्यों हिचकते हैं? क्या इसलिए कि हम इसके मूल्य की गहराई को नहीं समझते?

यशायाह हमें पद 2 में चेतावनी देते हैं:

“क्यों तुम उन चीज़ों पर धन व्यर्थ खर्च करते हो जो भक्षण नहीं हैं, और उन कामों में अपनी मेहनत लगाते हो जो संतोष
नहीं देते?”

अन्य शब्दों में, जब परमेश्वर हमें कुछ बहुत अधिक संतोषजनक और अनंत मूल्यवान दे रहे हैं, तो हमें उन चीजों में समय, ऊर्जा और संसाधन क्यों लगाना चाहिए जो वास्तविक संतोष नहीं देंगे?

प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्याय में, हम निमंत्रण की तात्कालिकता की याद दिलाई जाती है:

प्रकाशितवाक्य 22:17 (NIV):

“आत्मा और वधू कहते हैं, ‘आओ!’ और सुनने वाला कहे, ‘आओ!’ और
प्यासा आओ; और जो चाहे वह जीवन के जल का मुफ्त उपहार ले।”

यह समय है कि हम परमेश्वर के आह्वान का उत्तर दें। उद्धार का प्रस्ताव हमेशा नहीं रहेगा। समय सीमित है, और अंत समय के संकेत स्पष्ट होते जा रहे हैं। क्या आप आज उद्धार का मुफ्त उपहार स्वीकार करेंगे? क्या आप क्रूस को अपने सामने और संसार को पीछे रखकर मसीह का अनुसरण करेंगे और वह अनंत जीवन प्राप्त करेंगे जो वह देते हैं?

सुसमाचार मुफ्त है, लेकिन मसीह के लिए नहीं। उन्होंने हमारे पापों का पूरा बोझ क्रूस पर उठाया ताकि हमें मुफ्त में उद्धार प्रदान किया जा सके। इस मुफ्त उपहार को स्वीकार करने का आह्वान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा।

इसलिए, “आओ, खरीदो और खाओ”, न कि पैसे से, बल्कि विश्वास से, मसीह के क्रूस पर किए गए कार्य पर भरोसा करते हुए।

Share on:

WhatsApp